तीन साल सोने वाला लड़का

डायना, चित्र : एलन, हिंदी : विदूषक

तीन साल सोने वाला लड़का

डायना, चित्र : एलन, हिंदी : विदूषक

नगारा नदी के किनारे जहाँ लम्बी गर्दन वाले जलकाग (कार्मोरान्ट) रात को मछलियाँ पकड़ते थे, वहां एक गरीब विधवा अपने बेटे के साथ रहती थी.

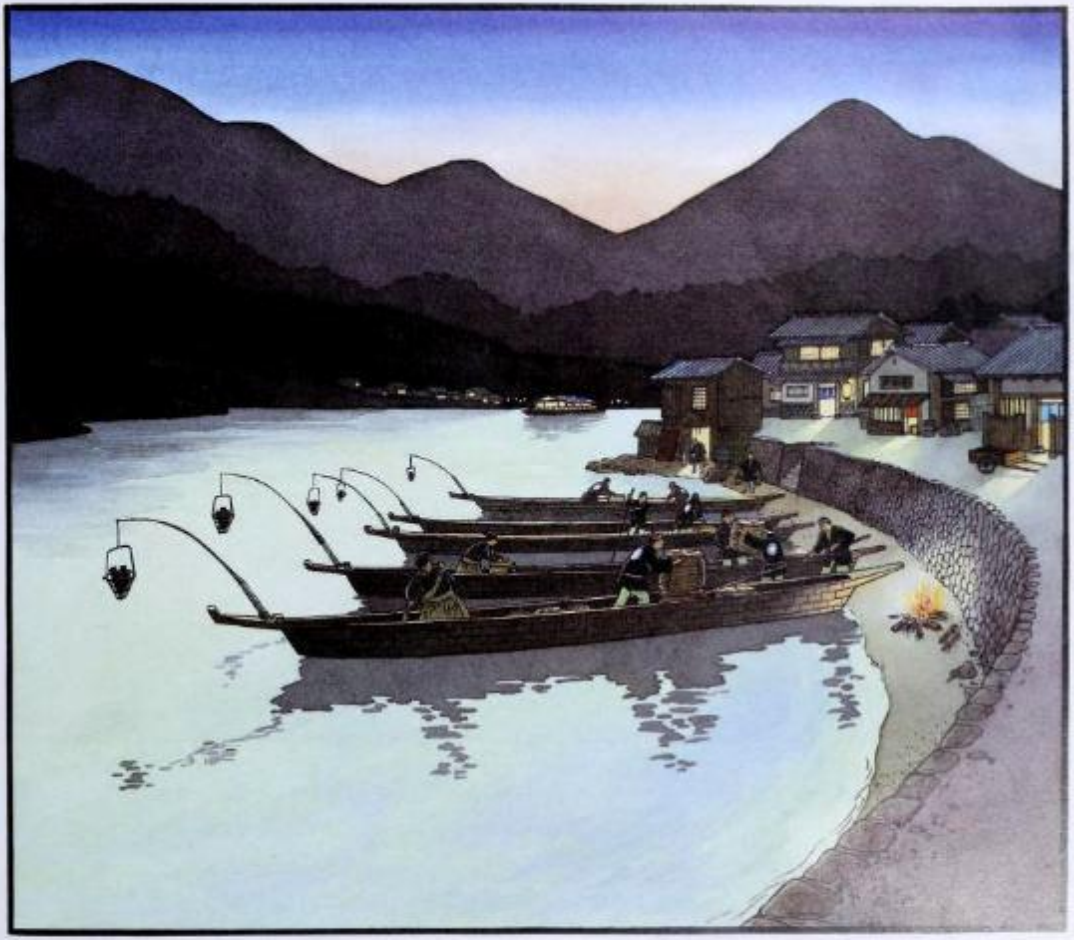

पूरे दिन विधवा शहर की रईस औरतों के लिए रेशम के किमोनो सिलती थी. सिलाई करते समय उसका सिर ऊपर-नीचे हिलता रहता था, बिल्कुल वैसे ही जैसे जलकाग, मछली पकड़ते समय करते हैं.

"आगे क्या? आगे क्या?" ऐसा लगता वो कहती – क्योंकि उसका काम कभी ख़त्म ही नहीं होता था. उसका एक मात्र बेटा तारो, बहुत होशियार था और अपनी माँ जैसा ही स्वस्थ्य था.

पर तारो बहुत आलसी था – बिल्कुल किसी धनी व्यापारी की मोटी बिल्ली जैसा. वो दिन भर पेट भर के खाता, सोता, फिर खाता और सोता.

अगर उसे कोई काम बताया जाता तो वो जम्भाई लेकर बहाना बनाता, “सोकर, उठने के बाद करूंगा.”

लोग कहते कि अगर तारो को नींद से कोई नहीं उठाता तो वो एक-साथ पूरे तीन साल तक सोता रहता. इसलिए लोग उसे - तीन साल सोने वाला लड़का बुलाते थे.

जब तारो बड़ा हो रहा था तो चावल का एक व्यापारी उनके पड़ोस में आकर बसा. उसने एक बड़ा आलीशान मकान बनवाया. उसमें बीस कमरे थे जिसमें हरेक का स्लाइडिंग दरवाज़ा एक सुन्दर बगीचे में खुलता था. बाग़ के बीच में एक ताल था जो सुनहरी कार्प मछलियों से भरा था. बगीचे के अंत में एक चाय-घर था जहाँ शाम की ठंडक में बैठकर लोग चाँद को निहार सकते थे.

व्यापारी की पत्नी और बेटी सुन्दर, महंगे किमोनो पहनती थीं. उन पर सोने की कढ़ाई होती थी. व्यापारी खुद हाथी-दांत की छड़ी लेकर चलता था. वो असली सोने के पाइप से तम्बाखू पीता था.

तारो अपने नए पड़ोसियों से बहुत प्रभावित हुआ. वो अपने सोने के बीच में कभी-कभी उनके बगीचे में चुपके से घूमने चला जाता था. जो कुछ भी तारो देखता, वो उससे बहुत प्रभावित होता – आलीशान मकान, सुन्दर बेटी और कार्प मछलियों से भरा तालाब! वाह!

जब व्यापारी अपनी छड़ी से चावल के बोरों को गिनता तो तारो कहता, “कितनी आलीशान ज़िन्दगी है इन लोगों की!”

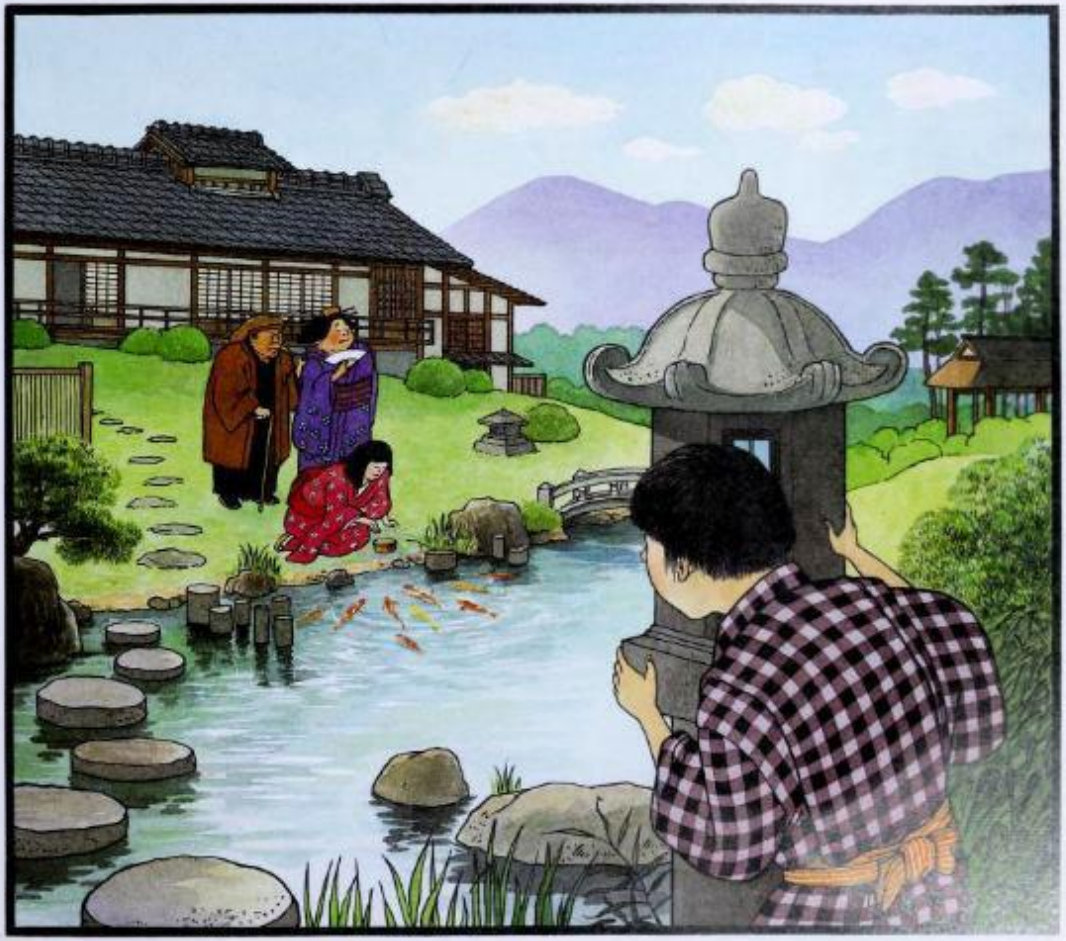

महीने बीतने के साथ-साथ तारो और आलसी होता चला गया. माँ उसे परेशान करतीं, कभी एक कान में कभी दूसरे कान में.

"मैंने सुना है कि उस व्यापारी को काम करने वाले एक लड़के की तलाश है," माँ ने तारो से कहा.

"उसे लड़के की क्यों ज़रुरत है?" तारो ने पूछा.

"चावल के बोरे उठाने के लिए, और क्यों?" माँ ने कहा.

"चावल के बोरे ढोना! तौबा-तौबा!" तारो हंसा. "मुझे उस पागल पर रहम आएगा जो यह नौकरी स्वीकार करेगा. उसकी पीठ भी उस बूढ़े व्यापारी जैसी ही झुक जाएगी."

"तुम दिन भर घर में निठल्ले बैठे रहते हो, तुम कुछ काम क्यों नहीं करते?" माँ ने रोते हुए कहा. "घर की छत चलनी जैसी चू रही है, दीवारों का प्लास्टर गिर रहा है और चावल का बोरा एकदम खाली है. मुझे पता नहीं हम जिंदा कैसे रहेंगे. सच में मुझे नहीं पता!"

"माँ, मेरे दिमाग में एक योजना है. तुम उससे एकदम खुश हो जाओगी, माँ."

"तुम कैसी बातें करते हो? तुम्हें नौकरी चाहिए, योजना नहीं!"

"तुम फ़िक्र मत करो, माँ. सिर्फ मेरे लिए एक काला किमोनो और हैट सिल दो, बिल्कुल वैसी जैसे पुजारी पहनते हैं."

"तुम उनका क्या करोगे?"

"वो मेरी योजना का हिस्सा है." तारो ने बस इतना ही कहा.

“हो सकता है वो पुजारी बनना चाहता हो,” तारो की माँ ने सोचा. पर जिन पुजारियों को वो जानती थीं वो सुबह तड़के उठते थे, दिन में सिर्फ एक बार भोजन करते थे और दिन के समय कभी नहीं सोते थे. उन्होंने बहुत कोशिश की, पर वो अपने बेटे को पुजारी के रूप में नहीं देख पाईं. फिर भी उन्होंने बेटे के लिए किमोनो और हैट बनाई. शायद वो इस तरह उसकी कुछ मदद कर सकें.

अगली शाम तारो ने अपने नए कपड़े पहने. फिर एक कोयले से उसने अपने माथे और गालों पर काली लकीरे बनाईं. मेक-अप करने के बाद तारो किसी समुराई योद्धा जैसा डरावना दिखने लगा.

“क्या तुम वाकई में तारो हो?” माँ ने पूछा.

“माँ तुम चिंता मत करो,” तारो ने कहा. “यह सब मेरी योजना का अंग है. तुम इसके बारे में एक शब्द भी किसी से मत कहना.”

इससे पहले माँ कुछ कहतीं, तारो तेज़ी से घर के बाहर निकल चुका था.

शाम के समय व्यापारी अपने घर के बाहर टहलने निकला.

“नमस्ते मैडम,” उसने तारो की माँ से कहा. “मुझे लगता है कि आपका आलसी बेटा अभी भी पलंग पर सो रहा होगा.”

“वो आज कुछ ज्यादा ही थका था, श्रीमान,” विधवा ने उत्तर दिया.

"देखो, तुम बहुत नर्म दिल की हो. तुम्हारा बेटा उसका फायदा उठता है. उसे कोई लात मारने वाला चाहिए. शाम के समय सोना? भला, यह भी कोई बात है!"

व्यापारी टहलते-टहलते "उजीगामी" के मंदिर तक पहुंचा. मंदिर में उस शहर के इष्ट-देव "उजीगामी" की मूर्ति थी. जैसे ही व्यापारी प्रार्थना के लिए झुका वैसे ही काले कपड़े एक आदमी उसके सामने आया और एक भूत की तरह उसपर घुर्राने लगा.

“तुम कौन हो...?” घबराए हुए व्यापारी ने पूछा.

“मैं “उजीगामी” हूँ,” एक तेज़-तर्रार आवाज़ घुर्राई.

“तुम मुझ से क्या चाहते हो? मैंने क्या गलती की है?” व्यापारी ने घबराई आवाज़ में पूछा.

“अब समय आ गया है तुम्हारी बेटी की शादी का,” “उजीगामी” ने कहा. “तुम तुरंत अपनी बेटी की शादी उस लड़के से कर दो जो तुम्हारे पड़ोस में रहता है.”

“आप किस लड़के की बात कर रहे हैं, महाराज?”

“मैं उस युवा लड़के - तारो की बात कर रहा हूँ.”

“तारो!” उसके बाद व्यापारी ने अपनी आँखें मलीं. “आपका मतलब उस निकम्मे लड़के से है जो इकट्ठे तीन साल तक सोता है.”

“हाँ, वही तारो!”

“नहीं! नहीं! ज़रूर आपने कुछ गलती है!”

“भगवान कभी गलती नहीं करते हैं!”

उसके बाद व्यापारी थरथराने लगा. “ज़रूर मेरी बेटी की शादी किसी लायक आदमी से होगी. तारो से वो कभी शादी नहीं करेगी.”

“नहीं यह शादी होकर ही रहेगी,” “उजीगामी” ने जोर से कहा, “भगवान ने यही तय किया है. यह उनका निर्णय है. भगवान को सिर्फ यही मंज़ूर है!”

“मेरे भगवान आप मुझे इस बारे में कुछ सोचने का कुछ मौका तो दें. क्या हम एक-दो साल और इंतज़ार नहीं कर सकते हैं?”

“नमक हराम इंसान!” “उजीगामी” जोर से बरसा. “मेरे साथ मोल-तोल करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई! अगर तुमने इस रिश्ते में कुछ भी देर की तो मैं तुम्हारी बेटी को एक मिट्टी के मटके में बदल दूंगा! फिर देखना उसे कैसा पति मिलेगा!”

“माफ़ करें! ऐसा न करें!” व्यापारी ने रोते हुए कहा. “मेरी प्यारी बेटी! मिट्टी का मटका? मुझ पर रहम करें!”

फिर व्यापारी अपने घुटनों पर बैठ गया और अपनी दोनों मुट्ठियों से ज़मीन को पीटने लगा. अंत में वो रोते-रोते एकदम थक गया.

पर तब तक इष्ट-देव वहां से लुप्त हो चुके थे.

अगले दिन सुबह तड़के ही व्यापारी ने विधवा का दरवाज़ा खटखटाया. उसकी आँखें लाल थीं और उसका चेहरा एकदम बुझा हुआ था. ऐसा लगता था जैसे वो पूरी रात सुबक-सुबक कर रोया हो.

"मैडम, मैं आपके पास एक बहुत ज़रूरी काम से आया हूँ," उसने बहुत दुखी होकर कहा. "ऐसा लगता है कि मेरी बेटी को आपके बेटे से शादी करनी ही पड़ेगी ..."

यह सुनकर उस बूढ़ी विधवा का मुंह खुला-का-खुला रह गया.

"हाँ, आपके बेटे के साथ मेरी बेटी की शादी," व्यापारी ने अपनी बात दोहराई. "कल "उजीगामी" प्रगट हुआ था, यह उसी का आदेश है."

"पर "उजीगामी" तो इससे पहले किसी को कभी भी नहीं दिखा," विधवा ने कहा.

"पर पिछली रात वो वाकई में प्रगट हुआ. मैं बरबाद हो गया हूँ."

"महाशय, मुझे यह बताएं कि वो "उजीगामी" देखने में कैसा था?"

व्यापारी ने थर-थर कांपते हुए कहा. "वो एक पुजारी जैसे काले कपड़े पहने था, पर देखने में भूत जैसा नज़र आता था. उसका चेहरा एकदम काला था और वो एक योद्धा जैसा भयानक था."

यह सुनकर विधवा अपने बेटे की योजना समझ गई. उसका सिर ऊपर-नीच हिलने लगा, जैसे कोई जलकाग तालाब में मछली पकड़ रहा हो. फिर भी उसने अपनी उत्सुकता ज़ाहिर नहीं की.

फिर उसने व्यापारी से कहा, "हम लोग गरीब लोग हैं, श्रीमान. मेरा तारो, आपकी कुलीन बेटी से भला कैसे शादी कर सकता है?"

"मैं आपसे सहमत हूँ," व्यापारी ने कहा. "पर दुर्भाग्य से हमारे-आपके सोचने से कुछ फर्क नहीं पड़ेगा. हमें भगवान के आदेश का पालन करना ही चाहिए नहीं तो वो मेरी बेटी को मिट्टी के मटके में बदल देंगे."

"यह तो बहुत बुरा होगा!" विधवा ने अपनी आँखें तरेरते हुए कहा. "पर महाशय, अगर यह शादी हुई भी, तो भी आपकी बेटी इस गरीबखाने में रहना पसंद नहीं करेगी. हमारी छत चलनी जैसी चूती है और दीवारों में इतने छेद हैं कि हवा सर्राटे से घर के अन्दर आती है."

व्यापारी ने यह सुनकर अपनी नाक सिकोड़ी. उसने इस बारे में सोचा नहीं था.

"कोई बात नहीं, मैं अपने आदमी को भेज कर आपके घर की मरम्मत करवा दूंगा," व्यापारी ने कहा.

अगले दिन सुबह-सुबह एक मिस्त्री घर की मरम्मत करने आया.

“बहुत अच्छा! बहुत अच्छा!” तारो पलंग पर लेटे हुए बड़बड़ाया.

शाम को व्यापारी ने फिर विधवा से पूछा, “क्या अब आप शादी के लिए अपनी मंज़ूरी देंगी?”

“माफ़ करें श्रीमान?” विधवा ने झुकते हुए कहा. “आप खुद ही देख सकते हैं कि हमारे घर में सिर्फ एक ही कमरा है. आपकी बेटी को इतनी छोटी जगह में रहते हुए शर्म आएगी.”

“सच बात है,” व्यापारी ने स्वीकार किया. “कल मैं अपने बढ़ई भेजूंगा जो आपके लिए बहुत से नए कमरे बना देंगे.” व्यापारी के जाने के बाद, तारो ने हँसते हुए कहा, “सुन्दर! वाह! मेरी योजना काम कर रही है!”

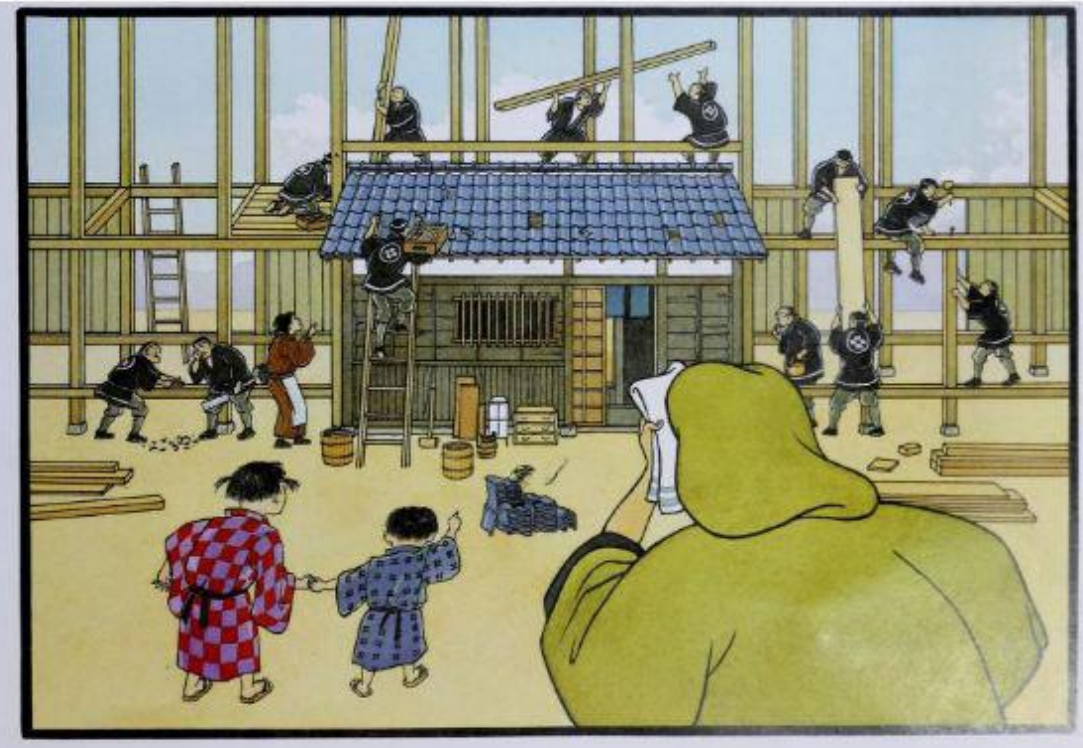

जब विधवा का पूरा घर बन गया तब व्यापारी दुबारा आया और उसने पूछा, “क्या अब आप इस शादी को अपनी मंज़ूरी देंगी?”

“महाशय, मुझे डर है कि आपकी बेटी को फिर भी हमारे यहाँ ख़ुशी नहीं मिलेगी.”

“अब क्या परेशानी है?” व्यापारी चिल्लाया. “आप अपनी परेशानी जल्दी बताएं नहीं तो मेरी बेटी मिट्टी के मटके में बदल जाएगी!”

“मेरे बेटे तारो की कोई नौकरी नहीं है,” विधवा ने कहा. “फिर वो आपकी बेटी को तमाम सुख-सुविधाएँ कैसे उपलब्ध कराएगा?”

“इससे तो मैं तबाह हो जाऊँगा,” व्यापारी गुस्से में चिल्लाया. “अच्छा ठीक है, आपका बेटा मेरी दुकान चलाएगा. पर एक बात मैं अभी साफ़ कर देना चाहता हूँ. उसे दिन में सोने का मौका बिल्कुल नहीं मिलेगा. क्या अब आप शादी के लिए अपनी अनुमति देंगी?”

फिर तारो की माँ ने जलकाग की तरह अपना सिर हिलाया. ऐसे जलकाग की तरह जिसने अभी-अभी मोटी कार्प मछली पकड़ी हो.

“हाँ, मुझे यह शादी मंज़ूर है,” अंत में विधवा ने कहा.

व्यापारी के जाने के बाद विधवा ने यह खबर तुरंत अपने बेटे तारो को बताई.

“उस व्यापारी ने हमें एक बहुत सुन्दर प्रस्ताव भेजा है,” माँ ने ख़ुशी-ख़ुशी कहा.

तारो पलंग पर उठकर बैठा. उसने अंगड़ाई ली और एक संतुष्ट बिल्ली जैसी जम्हाई ली.

“यह सब मेरी योजना का हिस्सा था. माँ, आशा है तुमने व्यापारी का प्रस्ताव स्वीकार करा होगा.”

“हाँ, मैंने उसे बिल्कुल स्वीकार किया,” माँ ने कहा. “कल सुबह से तुम अपनी नौकरी पर जाओगे.”

“काम! नौकरी!” तारो ने पलंग से कूदते हुए कहा. “आप यह क्या कह रही हैं? नौकरी तो मेरी योजना में नहीं थी!”

“बेवकूफ! तुम सोचते हो सिर्फ तुम ही कोई योजना बना सकते हो?” माँ ने उत्तर दिया.

फिर एक आलीशान शादी का आयोजन हुआ. शहरवालों ने ऐसी भव्य शादी पहले कभी नहीं देखी थी. शादी सफल रही – दोनों पति-पत्नी खुश रहे.

शहर के इष्ट-देव "उजीगामी" भी ज़रूर खुश हुए होंगे, क्योंकि उसके बाद से वो दुबारा कभी प्रगट नहीं हुए. व्यापारी की बेटी, मिट्टी के मटके में कभी नहीं बदली.

जहाँ तक तारो का सवाल है वो अपने ससुर की दुकान में चावल की खरीद-फरोख्त का हिसाब रखता रहा. वो कोई आसान काम नहीं था. अब तारो, शहर में सबसे व्यस्त इंसान तो नहीं था, पर वो सबसे आलसी व्यक्ति भी नहीं था.

अब बहुत समय बीत चुका है. अब लोग तारो को “तीन साल सोने वाला लड़का” नहीं बुलाते हैं. शायद अब लोग उस पुरानी बात को पूरी तरह भूल चुके हैं.